HINDI SECTION

CONTENTS

HINDI SECTION

		PAGE NO
1.	हिंदी भाषा का उत्तर-पूर्वी भारत की भाषाओं के साथ संयोजन"	डॉ. पंकज प्रताप सिंह 116
2.	जीवन की कहानी	Bhagyashree Nath 118
3.	तू दिन ....मैं रात	Iftiazur Rahman 119
4.	ज़िंदगी	Amarjeet Kumar Singh 120
5.	फुर्सत	Ravishankar Kumar 121
6.	भारतीय संस्कृति की विविधता	Mrinmoy Kalita 122
7.	सिपाही हूं भाई	Rajarshi Seal 123
8.	जब धूप बिछाए फूल बिछौना	Utsav Kumar 124
9.	"होस्टल की दीवारों के पार: दोस्ती की कहानी"	Amrit Kumar Tiwari 127

हिंदी भाषा का उत्तर-पूर्वी भारत की भाषाओं के साथ संयोजन"

डॉ. पंकज प्रताप सिंह
सहायक प्रोफेसर
कंप्यूटर विज्ञान और अभियांत्रिकी

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में हिंदी भाषा की सफलता की कहानी विशेष रूप से प्रेरणादायक है। इन राज्यों में हिंदी की प्रतिष्ठा और प्रचार को बढ़ावा मिला है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को मजबूत करता है। उत्तर-पूर्वी राज्यों में हिंदी की सफलता का प्रमुख कारण यह है कि यहाँ कई लोगों के बीच अनेक भाषाओं का संगम होता है और हिंदी भाषा एक समग्रता का संकेत है। सरकारी और अशिक्षित संस्थाओं में हिंदी का प्रयोग होने से लोगों की एक भाषा में संघर्ष की आवश्यकता होती है और इससे सामूहिक अनुभव और एकात्मता में वृद्धि होती है। इन राज्यों में हिंदी के प्रचार के लिए सरकारी पहल भी हुई हैं, जैसे कि हिंदी दिवस की धूमधाम से मनाया जाना और हिंदी को स्कूलों और कॉलेजों में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में शामिल किया जाना। इससे हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका को समझ में आई है और लोगों के बीच उसका प्रचार और प्रसार बढ़ा है। अत्यधिक शिक्षित और साक्षर समुदाय के विकास के साथ-साथ, उत्तर-पूर्वी राज्यों में हिंदी का प्रचार हो रहा है और यह भाषा समाज में आत्मविश्वास और सामूहिक एकता को बढ़ावा दे रही है। इस रीति से, हिंदी भाषा की सफलता की यह कहानी उत्तर-पूर्वी राज्यों के सामूहिक उन्नति और विकास की एक प्रेरणादायक उदाहरण है।

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में हिंदी भाषा को लेकर कई चुनौतियों का सामना किया जाता है।

भाषा संज्ञान: इन राज्यों में अनेक भाषाओं का संगम होता है और हर राज्य की अपनी विशेष भाषा होती है।
क्षेत्रीय भाषाओं का प्रचार: उत्तर-पूर्वी राज्यों में स्थानीय भाषाएँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
अंग्रेजी का प्रभाव: सरकारी काम, शिक्षा, और व्यापार में अंग्रेजी का प्रयोग आम हो गया है, जिससे हिंदी का प्रयोग घट रहा है।
तकनीकी अड्डा: इंटरनेट, वेबसाइट, और डिजिटल साधनों पर अधिकांश सामग्री अंग्रेजी में होती है, जिससे लोगों को हिंदी में सामग्री की अद्भुतता का सामना करना पड़ता है।

इन चुनौतियों के बावजूद, हिंदी भाषा की स्थिति उत्तर-पूर्वी राज्यों में धीरे-धीरे सुधार हो रही है, लेकिन इसके लिए समाज को मिलकर काम करने की आवश्यकता है ताकि हिंदी को उसका स्थान प्राप्त हो सके।

हिंदी भाषा का उत्तर-पूर्वी राज्यों में महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। हिंदी भाषा के और उत्तर-पूर्वी राज्यों की स्थानीय भाषाओं के बीच भिन्न-भिन्न संबंध है:

सांस्कृतिक संबंध: हिंदी और उत्तर-पूर्वी राज्यों की स्थानीय भाषाएँ एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं। यहाँ पर स्थानीय भाषाओं और हिंदी के बीच आपसी संबंधों के आधार पर एक सांस्कृतिक समांध होता है।

भाषा का आपसी सम्बन्ध: कई उत्तर-पूर्वी राज्यों में लोगों के बीच हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच आपसी सम्बंध होता है। यह लोगों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक विनिमय को बढ़ावा देता है।

व्यापारिक संबंध: हिंदी को उत्तर-पूर्वी राज्यों में व्यापारिक और आर्थिक संबंधों का माध्यम बनाया जाता है। इससे लोगों के बीच व्यापारिक संबंधों को सुगम बनाया जाता है।

शिक्षा का सम्बंध: हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने से लोगों के बीच शिक्षा के क्षेत्र में सामूहिक संबंध बनता है। इससे उनकी शिक्षा और विकास में सुधार होता है।

राजनीतिक संबंध: हिंदी को राजनीतिक संबंधों का माध्यम बनाया जाता है और इसके माध्यम से लोगों के बीच राजनीतिक संबंधों को मजबूत किया जाता है।

इस प्रकार, हिंदी भाषा उत्तर-पूर्वी राज्यों में स्थानीय भाषाओं के साथ संबंधों को मजबूत करती है और सामूहिक विकास और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देती है। हिंदी की मिश्रण की प्रक्रिया उत्तर-पूर्वी राज्यों के लोगों के बीच एक सामूहिक भाषा के रूप में सामर्थ्य और सामूहिक एकता को बढ़ावा देती है। इस प्रकार, भाषा के इस मिश्रण के माध्यम से लोगों के बीच संबंधों को मजबूती मिलती है और समृद्ध सामूहिक जीवन का समर्थन किया जाता है।

जीवन की कहानी

Bhagyashree Nath
CSE Dept (B. Tech 4th year)

चाँदनी की किरणें जगमगाती रात,
सितारों की चमक से भरी बात।

परिंदों की आवाज़ और हवाओं की लहर,
सपनों की उड़ान, मन की फिरक इस बहार।

प्रेम की गहराई, दोस्ती का रंग,
खुशियों की बौछार, ख्वाबों का संग।

जीवन की धूप में, संघर्ष की छाया,
आगे बढ़ते चलो, मन में हो जगा माया।

रोज़ की नई लड़ाई, हर क्षण की नयी कहानी,
हार-जीत के खेल में, बनी बजानी।

धरती की गोद में, सुख-दुःख का साथ,
समय के सागर में, तैरते हुए जीना यार।

ये जीवन की रहस्यमयी कहानी,
हर पल अनूठा, हर दिन नयी जवानी।

चलो बढ़ते चलें, मिलकर सपनों को पाने,
खो दें खुद को इस अद्भुत जीवन के लाभ।

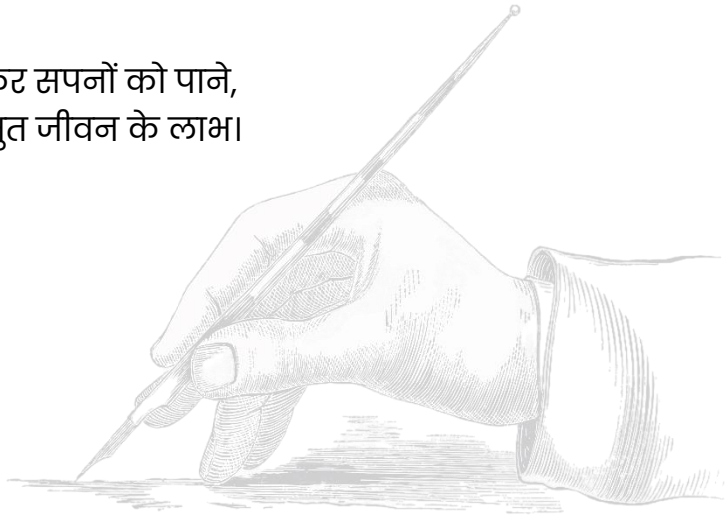

तू दिन ....मैं रात

IFTIAZUR RAHMAN
Ece Dept (B. Tech 4th year)

शहर की जैसी मुसारत तू
रात के जैसा ख़्वाबीदा मैं
आ ऐसे मुत्ताहिद् हो मुझसे
शाम के जैसी हसीनियत हो जाए

हवाओं के जैसी इनायत तू
आंसू सा गिरता बारिश हु मैं
मिल मुझसे ऐसे आज की
मौसम सुहानी सा हो जाए

मदिरा सी चढ़ती नशा है तू
दिल टूटा आशिक हूं मैं,
आ ऐसे डूब जाऊं तुझमें
की महफ़िल रूहानी सा हो जाए

आफताब सा सर्द हु मैं
छाँव सी आराम देती तू
पतझर से नाता तोड़के
बहार सा दुनिया कर आज

हाँ शायद तू दिन है
और शायद मैं रात
ज़माने के बेरियों से आज़ाद होकर
बेवक़्त बेपनाह मोहब्बत कर आज

ज़िंदगी

Amarjeet Kumar Singh
CSE Dept (B. Tech 4th year)

सूरज की किरनों में छुपी खुशबू,
आँखों में बसी धूप की चाह।
ज़िंदगी की राहों में बसी ख्वाहिश,
वो अनजान सफर,
जो चाहे ज़िन्दगी से बढ़कर।
एक बार जीना है, एक बार मरना है,
फिर क्यों ना जीवन का आनंद उठाएं।
दिल की गहराइयों में बसी खुशियाँ,
उन्हीं को जीने की आशा हम अपनाएं।

हर पल एक नया सफर,
हर लम्हा एक नया अद्भुत अनुभव,
ज़िंदगी की राहों में छुपी हर कठिनाई,
उन्हें अपने दिल में समेटे और अपनी
खुशियाँ बाँटे।
एक दिन हम सब मिट जाएंगे,
पर ज़िंदगी ज़िंदगी रहेगी,
इसलिए ज़िंदगी को खुशियों से भर देना ही
हमारा धर्म है।

खुशियों का उत्सव है ज़िंदगी,
आँखों में बसी मुस्कान है ज़िंदगी।
हर रोज़ एक नया सवेरा,
हर पल एक नया अद्भुत संगीत,
ज़िंदगी की राहों में बसी खुशियाँ,
उन्हें हम खुद से ही पहचानें।
जीवन की दौड़ में, खुद को न भूलें,
खुद को खोजें, खुद को पहचानें।

अपनी खुशियों के लिए, खुद को समर्पित
करें,
ज़िंदगी की राहों में बसी खुशियाँ,
उन्हें हम खुद से ही पहचानें।
खुशियों का उत्सव है ज़िंदगी,
आँखों में बसी मुस्कान है ज़िंदगी।
हर रोज़ एक नया सवेरा,
हर पल एक नया अद्भुत संगीत,
ज़िंदगी की राहों में बसी खुशियाँ,
उन्हें हम खुद से ही पहचानें।

फुर्सत

Ravishankar Kumar
Ece Dept (B. Tech 1st year)

बस फुर्सत मिला
तो सोचा तुझे फिर कागजो पर याद कर लिया जाए,
आखिर बहुत दिन बाद
तुझे याद करने का फिर एहसास ले लिया जाए।
तुम दिखती कैसी थी
ये फिर देख लिया जाए
वो घूमर तेरे काजलों का रेहता या तेरी आंखों का
उन रंजिशों में फिर से फस्सा जाए
बस थोड़ा फुरसत मिला
तो सोचा तुझे देखने के बहाने
फिर याद कर लिया जाए।

भारतीय संस्कृति की विविधता

MRINMOY KALITA
CSE Dept (DIPLOMA 2nd year)

बहुविधता की रचना, हमारी भारतीय संस्कृति,
अनेक जाति, धर्म, एकता की अनुभूति।

एक बारमबार हर साल, त्योहारों का मेला,
खुशियों की लहरें, गीतों की मस्ती में खो जाता दिल।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
सबका मिलन, अद्वितीय संस्कृति का आईसा।

रंग-बिरंगे वस्त्रों में सजती हैं महिलाएं,
उनकी मिठास और सादगी से भरा है हर दिन।

भोजन की विविधता, अनोखी रसोई की बातें,
रोटी, कचौरी, दोसा, बिरयानी - सब की मिठास में मतवाली।

संगीत की ताल, नृत्य का उत्साह,
कला की जय बजती है हर कोने में, अपार संस्कृति का साह।
भारतीय संस्कृति का सौंदर्य, उसकी अमूल्य रौशनी,
विविधता का परिचय, भारत की अनोखी पहचान है हमारी राष्ट्रीय भाषा।

सिपाही हूं भाई

Rajarshi Seal
CSE Dept (B. Tech 4th year)

दो गज दूर, रहता एक सिपाही;
अकेला था, कहता,
"देश तो देश है, कौन है इसका दोशी.
पसंद मुझे है, ये खामोसी"
मैं सोचता, इस वर्दी की मजबूरी
इस देश के लिए, इनकी जी हुजूरी।

एक सुबह, रास्ते पे मिले,
तो पूछा,"वर्दी क्यों है इतनी जरूरी? "
कहता "सिपाही हू भाई,
वर्दी ही सब कुछ"
"वर्दी के बिना में ना कुछ "
"वर्दी है मेरी जान,
वर्दी के लिए मेरा प्राण"
फिर हस्ता हुआ चल दिया वो,
फिर ना मिले कभी;हुआ ऐहसास, अभि।
उनको मेरा सलाम हमेशा, दुआ हज़ार;
उनके कारण देश बेकरार॥

जब धूप बिछाए फूल बिछौना

Utsav Kumar
ECE.Dept (B. Tech 3rd year)

वसंत की पगध्वनि आहट दे रही है। हालांकि आते आते वह रह रहकर ठिठक जाता है।उसके ठिठक जाने से मन बेचैन होने लगता है। इस बेचैनी को भीतर का मौसम तो भांप लेता है पर बाहर का मौसम कुछ समझ नहीं पाता। वास्तव में वसंत आता नहीं,अब उसे लाना होता है। टेरना गुहराना होता है। उसे आवाज़ देनी होती है। वह कभी सुनता है तो कभी आवाज़ की अनसुनी भी कर देता है। उसे बार बार पुकारना होता है। मुक्तिबोध के शब्दों में कहें तो एक पुकारती हुई पुकार के साथ उसे बुलाना होता है,आमंत्रित करना होता है। अब यह वसंत पर निर्भर करता है कि वह आपका बुलौवा किस रूप में स्वीकार अथवा अस्वीकार करता है। वैसे अपनी पुकार पर आस्था रखकर उसे बुलाया या टेरा जाए तो वह अवश्य ही आता है। बदले हुए समय में उसके आने की अपनी शर्तें हैं। सबसे ज़रूरी शर्त तो यह है कि अब तक उसे तारीख ही समझा गया है ,अब उसे महज़ एक तारीख न समझा जाए,केवल एक ऋतु भर न समझा जाए बल्कि समग्रता में उसके स्वभाव को समझा जाए। पलक पांवड़े बिछाए जाएं। उसके बारे में एक उत्कंठा हो। विद्यानिवास मिश्र जी से उसे थोड़ी सी शिकायत है,जो यह कहते थे कि वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं। आपको उत्कंठा नहीं होगी तो भला वह क्यों आएगा। उत्तराधुनिकता के दौर में कोयल की कूक अगर हाशिए पर चली गई है तो अचरज या आश्चर्य कैसा? बिना बात के लिए नास्टेलजिक होने की जरूरत नहीं है। अतीतजीवी मक्खियां जब बहुत परेशान करने लग जाएं,तो अपने वर्तमान को नए सिरे से महसूस करना होगा,तभी भविष्य के दरवाज़े खुल सकेंगे। आमों में बौर को आना है,वह तो देर सबेर आएगा ही। हमें अपने इंतज़ार पर भी भरोसा करना होगा। वसंत के मायने अगर बदल रहे हैं,तो इस परिवर्तन और बदलाव को भी सही परिप्रेक्ष्य में समझना हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। समय के साथ अब अपना वसंत पूरी तरह से वेलेंटाइन हो चुका है।कवि हरीश चंद्र पांडे कहते हैं

बेहद प्रकंपित
बेहद अस्थिर
बेहद तनावग्रस्त हैं
वसंत के तार
सितारवादक वसंत की
घाटियों से गुज़र रहा है।

सितार के तार का तनावग्रस्त होना यूं ही नहीं है। मन भी क्या कम तनाव में रहता है,पर वहीं से रचना के नए कल्ले भी फूटते हैं। वसंत बहार का अपना सौरभ है, सुरों का अपना सिंगार है। हमें हमेशा रोते रहने की अपनी शाश्वत आदत छोड़नी होगी,तभी तो अपना यह बदला हुआ वसंत

, बदले हुए अंदाज़ में मुस्कुराएगा। दूर दूर तक गंगा यमुना के फैले हुए कछार में मीलों मील सरसों बिछ गई है।यह प्रकृति की शुभ रंगों से रंगी पाती हर किसी के नाम है,बस इन्हें पढ़ने का सलीका आना चाहिए, ताकि जनाब फ़ैज़ अहमद फैज़ को फिर यह कहना न पड़े,

न गुल खिले, न उनसे मिले, न मय पी है
अजीब रंग में अबकी बहार गुजरी है।

मन तो करता है काश कभी कोई ऐसी बहार भी आती जो कभी गुजरती ही नहीं। अब तो इंटरनेट पर वसंत आता है और कभी कभी तो आने के साथ उल्टे पैर लौट भी जाता है और हम देखते रह जाते हैं।इसके ज़िम्मेदार हम ही हैं कि उसपर बाकायदा ध्यान नहीं देते। तवज्जो न मिलने पर वह मायूस हो जाता है।यही वसंत के दिन पहले जब आते थे तो कहना पड़ता था

दिन वसंत के आ गए,हंसे खेत खपरैल
एक हँसी में घुल गया,मन का सारा मैल।।

जब हमारे आसपास पतझर, पत्तों को ताश के पत्तों की तरह फेंट रहा हो तो हमें वसंत के दर्द को गहरे संवेदनशील ताप के साथ किसी पहेली की तरह ही बूझना पड़ेगा।यह पहेली समझ आ जायेगी तो वसंत का गणित भी समझ आ जायेगा। हम वसंत को वसंत ही रहने दें, कोई नाम न दें तो भी चलेगा।पर उसका चेहरा तो न बिगाड़ें। गुलज़ार साहब भी इसीलिए प्यार को प्यार ही बने रहने देने की बात करते हैं,उसे कोई नाम न देने की वकालत करते हैं।
फरवरी अगर देखते देखते अप्रैल हो जाए, वसंत अगर देखते देखते जेठ बैसाख हो जाए तो हमें अपने भीतर झांकना होगा। पारिस्थिक तंत्र में असंतुलन, प्रकृति का अनाप शनाप दोहन, उसके साथ खिलवाड़,सब कुछ ग्लोबल वार्मिंग के मूल में है। वह कौन सी बात है जिसके चलते पूरा जाड़ा बीत जाने के बाद बर्फ़ गिर रही है।
सोचिए, कितनी चिन्ता की बात है,जब फूल ही खिलने में संकोच का अनुभव करने लग जाएं, असमंजस महसूस करने लगें। आमा साहब आज़मी कहते हैं,

दो चार कलियों पे निखार आया तो क्या आया
मज़ा तब है कि कांटे भी पुकार उठें बहार आई, बहार आई

वसंत पंचमी पर वसंत के अग्रदूत महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला को ही याद न करें तो फिर काहे का वसंत।वसंत, फागुन की ज़मीन तैयार करता है। वसंत पंचमी निराला का जन्मदिन है,तो होली महीयसी महादेवी जी का,जो वर्षों निराला की पौरुषेय कलाई पर राखी बांधती रहीं। वसंत तो ऐसा मौसम है जो सारी विसंगतियों और विडंबनाओं को अपनी सुगंध की नदी में बहा ले जाता है। दुनिया में अगर प्रेम रहेगा तो कभी वसंत अप्रासंगिक हो ही नहीं सकता। वसंत नहीं बदला है,बस उसे मनाने के तरीके थोड़े से बदल गए हैं, देखिए न अपने चारों तरफ़ दूर दूर तक बिछ गई, सरसों मीलों मील धीरे धीरे बस गई, यादों की तहसील।।
फूलों के अक्षर में आज भी गंध के निवेदन होते हैं, तभी तो हर गीत आत्मा के अतल में संकीर्तन की तरह ही उठता है। कविता के कीर्तिपुरुष केदारनाथ अग्रवाल की कविता वसंती हवा का

झोंका आज भी भला किसको नहीं नहला जाता। जब वह कहते थे, हवा हूं हवा, मैं वसंती हवा हूं... तो यह सुनकर भीतर का मौसम हरा होने लगता था। कैलाश गौतम का यह दोहा आज भी भिगो जाता है,जब किसी डायरी या किताब में मोरपंख मिल जाते हैं, लगे फूंकने कान में,बौर गुलाबी शंख कैसे रहें किताब में, हम मयूर के पंख।।

सुभद्राकुमारी चौहान तो वसंत से ही सवाल करती थीं, वीरों का कैसा हो वसंत। मैं घोंघा वसंतों की बात नहीं करता।मुझे बहुत तो बचपन से ही गेंदों के फूलों से सजा, सरस्वती का सौम्य साधक वसंत देखने को मिला है। हां मेरा आशय है छायावाद के महान समालोचक गंगाप्रसाद पांडेय की ओर, जिन्होंने सबसे पहले निराला को महाप्राण और महादेवी जी को महीयसी कहा था। गंगाप्रसाद जी को महादेवी जी वसंत कहकर ही बुलाती थीं, हर युग और हर समय का अपना वसंत होता है। हम आधुनिक हुए हैं तो क्या वसंत आधुनिक नहीं होगा। चोट तो भाई अब भी लगती है जब कोई फुलगेंदवा से मारता है
फुलगेंदवा न मारो, लगत करेजवा पे चोट,वाला गीत और सन्दर्भ याद कीजिए।अतीत से रोशनी लेनी चाहिए पर उसे अपने वर्तमान और भविष्य पर सवारी नहीं करने देनी चाहिए, वर्ना ज़िंदगी की चाल ही बिगड़ जाने का खतरा बना रहता है –

जो बोझ बन के जिन्दगी की चाल रोक दे
उसको उतार फेंकिए वो सर ही क्यों न हो ।

हमारे कंप्यूटर युग का भी अपना अलग ही वसंत है,जो ज्ञान की खुशबू से भी हमें सींचता है। वसंत के नए नए फूल शिशुओं से भी संवाद करना होगा, यह संवाद भी नए रास्ते खोलेगा ही। कई बार तो असहमतियां भी संवाद के रास्ते खोलती हैं। इन सारी प्रक्रियाओं से ही आ हुज के वसंत की सही शिनाख्त सम्भव हो पायेगी और हम उसकी पगध्वनियों का वास्तविक रोमांच जी सकेंगे।

"होस्टल की दीवारों के पार: दोस्ती की कहानी"

Amrit Kumar Tiwari
Cse Dept (B. Tech 4th year)

एक छोटे से गाँव के निवासी, विक्रम, एक उत्साही और जिज्ञासु लड़का था। उसके गाँव में शिक्षा की संभावनाएं कम थीं, इसलिए उसने अपने माता-पिता के साथ नई दिल्ली के निकट एक पंजीकृत छात्रावास में रहने का निर्णय किया।
विक्रम के साथी भी वहाँ के होस्टल में रहते थे। उनके नए दोस्ती ने उन्हें एक-दूसरे के समझने और जीवन के मुद्दों को साझा करने का अवसर दिया। उनके दिन बीतते और बंधन बढ़ते गए। वे एक-दूसरे के साथ समय बिताने, पढ़ाई करने, खेलने और विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे। जैसे-जैसे समय बीतता, उनकी दोस्ती मजबूत होती गई। वे एक-दूसरे के साथ अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करते और एक दूसरे का साथ निभाते थे।
हर साल की छुट्टियों में वे अपने गाँव जाते और अपने परिवार से समय बिताते, लेकिन होस्टल में उनकी दोस्ती कोई भी दूरी नहीं बना सकती थी।
विक्रम के साथी के साथ, वे अपनी जिंदगी के अद्वितीय लम्हों को बाँधते और उन्हें अपने दिल में संजोते। उनका साथ उन्हें हमेशा सहारा देता और उनके सपनों को हकीकत में बदलने के लिए प्रेरित करता।
होस्टल के आखिरी दिनों पर, वे एक-दूसरे के साथ गहरे बंधन में बाँधे हुए थे। उन्होंने आपसी यादों को अमर बनाने का वादा किया और एक दूसरे की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी। जैसे ही वे होस्टल के द्वार से बाहर निकले, उनके दिल में एक अलग सा दर्द था, लेकिन उन्होंने वादा किया कि वे कभी भी अपने यारों को भूल नहीं सकेंगे।